दिनांक : 12-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० शाकिर आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- पाँच

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- बॉक्सर विद्रोह -

(5) यूरोपीय पूँजीवादी - चीनियों को यूरोपीय जातियों से घृणा नहीं थी। उन्हें यूरोपिय पूँजीपतियों और सरकारों से घृणा थी। वे इस बात से सशंकित थे कि यूरोपीय पूँजीवादी का जाल उन्हें शीघ्र ही राह की तरह ग्रस लेगा। चीन के अनेक अधिक साधनों पर उनका नियंत्रण था। उद्योग-धंधों रेलवे खानों आदि पर विदेशियों का अर्थजाल फैला हुआ था। देशभक्त चीनी इस आर्थिक साम्राज्यवाद की चाल को खूब समझते थे।

Scanned with CamScanner

लेनिन ने ठीक ही कहा था, चीनी यूरोपीय जातियों से घृणा नहीं करते! उनके साथ उनका कोई मनमुटाव नहीं है! वे यूरोपीय पूँजीपतियों और यूरोपीय सरकारों से घृणा करते हैं जो उनका शोषण करते थे!

(5) मंचू सरकार की दुर्बलता — बॉक्सर विद्रोह का एक अन्य कारण मंचू सरकार की दुर्बलता है! प्रथम दो अफीम युद्धों में चीन पराजित हुआ था! उसकी सारी गौरव-गरिमा जाती रही! मंचू राजाओं का सारा दर्प स्वाहा हो गया! सरकार की दुर्बलता स्पष्ट हो गई! 1894 में ही ताईपिंग विद्रोहियों ने विद्रोह कर दिया! किंतु विदेशी फौज की मदद से मंचू सरकार ने विद्रोहियों को कुचल दिया! इससे मंचू सरकार के नापाक इरादे स्पष्ट हो गया! सरकार के विदेशियों के साथ अपवित्र गठबंधन हो गया! चीनियों को यह अत्यंत बुरा लगा! वे स्वयं आगे बढ़कर

कुछ करने के लिए तैयार हो गए। बॉक्सर - विद्रोह की पृष्ठ भूमि तैयार हो गई।

(6) दुर्भिक्ष का प्रकोप - इसी समय चीन के छह प्रांतों के भीषण अकाल पड़ गया। बालू नदी के किनारे के अनेक गाँव बाढ़ से नष्ट हो गए तथा टिड्डियों ने इनकी फसलों को बर्बाद कर दिया बाजरे और गेहूँ की फसल मारी गई। अकाल पीड़ितों की सहायता के लिए सरकार ने कुछ नहीं किया। असंतोष का वातावरण तो पहले से ही तैयार था इसने विद्रोह का रूप धारण कर लिया।

विद्रोह की गतिशीलता - बॉक्सर - विद्रोह का सम्बंध एक गुप्त संगठन से था। जिसका नाम इ-हो-चुआन अथवा अटूट भ्रातृत्व (Society of Righteous Harmony) था। इस दल के सदस्य अपनी बंधी मुट्ठी में अपनी शक्ति निहित समझते थे। 1898 के अंत में इस दल ने अपना विदेशी विरोधी अभियान शांतुंग प्रांत में प्रारम्भ किया।

पहले तो ईसाई धर्म प्रचारकों पर ही क्रोध उतारा गया। गिरजों को जला कर खाक कर दिया गया। धर्म प्रचारकों तथा देशी ईसाईयों की सामूहिक हत्या की गई। बाद में कुछ रेलमार्ग और तार भी उखाड़ दिए गए। विद्रोह की अग्रियता का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि यह शीघ्र ही शांतुंग से चिहली प्रांत तक फैल गया। रानी जु-सी को बर्बरों को देश से निकालने का यह अनुकूल अवसर प्रतीत हुआ। उसने दोहरी नीति का पालन किया। पहले तो विद्रोह-दमन के लिए राजाज्ञा प्रसारित की गई। तथा बाद में विद्रोहियों को प्रोत्साहित किया गया। गुप्त राजकीय संरक्षण पाकर विद्रोहियों का साहस बढ़ गया। और उन्होंने अपने इस अभियान को और भी तीव्र कर दिया। शांतुंग का गवर्नर विदेशियों और ईसाईयों का कट्टर शत्रु था। उसके चलते यहां विद्रोहियों

को काफी बढ़ावा मिला! वहां अनेक विदेशी मर डाले गये! विद्रोहियों का एक जत्था पीकिंग की ओर भी चल पड़ा जहां विदेशियों की संख्या काफी थी। पीकिंग और तिंत्सीन के बीच रेलवे-लाइन उखाड़ दी गई! इस तरह की छिटपुट अनेक घटनाएँ घटने लगीं! चीन के अनेक प्रान्तों में यह विद्रोह फैल गया! पीकिंग में रहने वाले विदेशी राजदूतों की स्थिति भी संकटग्रस्त हो गई! चीनी सरकार ने विदेशियों को 24 घंटे के अंदर राजधानी छोड़कर चले जाने का आदेश दिया! इसी समय जून 1900 में जर्मन राजदूत की हत्या कर दी गई! अब शीघ्र ही समस्त विदेशी पीकिंग के दूतावास में एकत्रित हो गए और तिंत्सीन से अपनी सेनाओं के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे इधर विदेशी नौ-सेना ने चीन के समुद्र-तट पर गोलाबारी प्रारंभ कर दी तथा अनेक महत्वपूर्ण नगरों व किलों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। तिंत्सीन के बढ़ने वाली सेना ने ताकू

के लिये जर्मनी, अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस तथा जापान की सेनाओं ने पीकिंग में प्रवेश किया। इससे वास्तव में चीन और विदेशी सरकारों के बीच युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। फलतः चीनी सरकार और विदेशी सैनिकों ने विद्रोहियों को कुचलना शुरू किया। राजमाता और उसके समर्थक पीकिंग छोड़कर जेहोल भाग गए।

विद्रोह की सफलता – बॉक्सर विद्रोह के असफलता के निम्नलिखित कारण थे।

(1) विदेशी सेना – विदेशियों की सबल सेना के समक्ष विद्रोहियों की कमर टूट गई। विद्रोह की खबर सुनते ही फ्रांस, जापान, रूस, जर्मनी, ब्रिटेन तथा अमरीका ने अपनी अपनी सेनाएं पिकिंग भेज दी। इनमें सबसे अधिक जापान की सेना थी। इन सैनिकों ने निर्मतापूर्वक विद्रोहियों को कुचल दिया था।

Scanned with CamScanner

(2) जनता का असहयोग – विद्रोह-विफलता का एक अन्य कारण जनता का असहयोग था। चीन के कुछ प्रान्तों में लोग बिल्कुल सोए हुए थे। बॉक्सर विद्रोह जनक्रांति नहीं बन सका। विद्रोहियों ने भी आम जनता का सहयोग प्राप्त करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया। अतः यह जन-आन्दोलन नहीं बन सका। यह इसके असफलता का मुख्य कारण बन गया।

(3) मंचू अधिकारियों की उदासीनता – मंचू अधिकारियों ने कोई उत्साह नहीं दिखलाया। उल्टे उन्होंने विद्रोह-दमन में विदेशियों का साथ दिया। तिब्सीन, नानकिंग तथा शूयांग के प्रान्तपतियों ने विद्रोह दमन में काफी सहयोग दिया। शांतुंग में युआन शि-काई विद्रोहियों का नेता था। किंतु उसने भी विद्रोहियों को धोखा दिया। प्रारंभ में तो राजमाता जू-सी ने विद्रोहियों के प्रति सहानुभूति दिखलाई थी, किंतु बाद में वह भी किनारे हो गई। विद्रोहियों के दमन के लिए अनेक घोषनाएँ निकली गई।

Scanned with CamScanner